लोकोक्तिरसकौमुदी ।

अर्थात् पखाने

जिसमें राय शिवदास कवि ने तीन सौ लोकोक्ति को उपाख्यान की रीति से कहा और इसी कारण लोग इसे पखाने अर्थात् उपाख्याने कहते हैं ।

जिसे अत्यन्त परिश्रम से शुद्धकर महामहोपाध्याय श्रीयुत पण्डित सुधाकरद्विवेदीजी ने भारतजीवन सम्पादक बाबू रामकृष्ण वर्म्मा को दिया और उन्होंने अपने व्यय से प्रकाश किया ।

काशी ।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुई ।

सन् १८९० ई० ।

प्रथम बार १०००] [मूल्य ।</) मात्र ।